प्राक्कथन

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य को कथा लेखिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। अधिकांश कथा-लेखिकाएँ कथा साहित्य को अभूतपूर्व योगदान दे रही हैं। प्राचीन युग की सर्वंसहा नारी की तुलना में आधुनिक युग की नारी में स्पष्ट परिवर्तन परिलक्षित होता है। आधुनिक नारी में विद्रोह-भावना प्रबल है और वह प्राचीन रूढियों को तोड फेंकना चाहती है। उसमें अपने अस्तित्व की चिन्ता है। पारिवारिक जीवन में ही नहीं, बल्कि राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भी उसका विद्रोह-स्वर प्रबल हुआ है। तत्कालीन नारी-लेखन इस बात का समर्थक है।

साठोत्तरी कथा-लेखिकाओं में मन्नूभंडारी का विशिष्ट स्थान है, जिन्होंने नयी कहानी आन्दोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने पारिवारिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक कथा-रचनाएँ की हैं। उनके छः उपन्यास हिन्दी साहित्य-जगत को मिले हैं। वे हैं, 'एक इंच-मुस्कान', 'आपका बंटी' 'कलवा', 'महाभोज', 'आसमाता' और 'स्वामी'।

' एक इंच मुस्कान' आधुनिक युग के युवक-युवतियों की विकल मानसिकता को स्पष्ट करनेवाला उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास विकल मानसिकता के कारण पारिवारिक जीवन में दिखाई पडनेवाली लक्ष्य हीनता के कुप्रभाव पर प्रकाश डालता है।

'आपका बंटी' उनका मनोवैज्ञानिक-पारिवारिक तथा आधुनिकताबोध का उपन्यास है। राजनैतिक किशोरोपयोगी उपन्यास है 'कलवा'। 'महाभोज' मन्नूजी का राजनैतिक उपन्यास है। प्राचीन और आधुनिक नारी-संस्कृति पर प्रकाश डालनेवाला तथा जीवन में आशा को

छोडे बिना अग्रसर होने का उपदेश देनेवाला दार्शनिक उपन्यास है 'आसमाता'। आधुनिक, पारिवारिक जीवन की विसंगतियों पर प्रकाश डालनेवाला उपन्यास है 'स्वामी'। मन्नूजी के इन सभी उपन्यासों में आधुनिक जीवन- चित्रण किया गया है।

मन्नूजी के उपन्यासों में 'आधुनिकता' पर प्रकाश डाले जाने के कारण शोध-प्रबन्ध का शीर्षक रखा गया है 'मन्नू भंडारी के उपन्यासों में आधुनिकता'।

यह शोध- प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभाजित है। पहला अध्याय है 'मन्नूभंडारी: व्यक्तित्व और कृतित्व'। इस अध्याय में मन्नूजी के जन्म से लेकर उनकी शिक्षा, शादी, नौकरी आदि वैयक्तिक बातों पर प्रकाश डालने के बाद उनकी साहित्यिक रचनाओं का विस्तृत परिचय दिया गया है तथा उनके साहित्यिक व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है।

दूसरे अध्याय में हिन्दी उपन्यास साहित्य का सामान्य परिचय प्रस्तुत करके उसमें मन्नूभंडारी के स्थान पर विचार किया गया है। इस अध्याय में समकालीन उपन्यास लेखिकाओं से मन्नू भंडारी की तुलना भी की गई है। अध्याय का नाम रखा गया है 'हिन्दी उपन्यास साहित्य में मन्नूभंडारी का स्थान'।

' मन्नूभंडारी के उपन्यासों में आधुनिकता' अध्ययन का विषय है। इस अध्ययन पर जाने के पहले मन्नूभंडारी के उपन्यासों की कथा-वस्तु का संक्षिप्त परिचय देना समीचीन होगा, इस विचार से तीसरे अध्याय में इसका प्रयास किया गया है और अध्याय का नाम रखा गया है 'मन्नूभंडारी के उपन्यास: कथा-वस्तु संक्षेप में।'

चौथे अध्याय का नाम है 'मन्नूभंडारी के उपन्यासों में आधुनिकता'। मन्नू भंडारी के प्रत्येक उपन्यास को लेकर उसकी आधुनिकता पर विचार करने के पहले आधुनिकता क्या है?, कथा - साहित्य में

आधुनिकता का मतलब क्या है? आदि बातों का परिचय दिया गया है। फिर मन्नूभंडारी के प्रत्येक उपन्यास की आधुनिकता पर प्रकाश डाला गया है।

आधुनिक रचनाएँ केवल कथ्य - पक्ष की दृष्टि से आधुनिक नहीं रहतीं, शिल्प - पक्ष की दृष्टि से भी उनमें आधुनिकता दिखाई पडती है। इस दृष्टि से अपने पाँचवें अध्याय में मन्नू भंडारी के उपन्यासों की शिल्प-विधि पर विचार किया गया है। यह अन्तिम अध्याय है और इस अध्याय में अपनी प्रत्येक औपन्यासिक रचना के कथ्य को उपन्यास के रूप में रूपायित करने केलिए जिन-जिन तकनीकों का प्रयोग मन्नू भंडारी ने किया है - इस पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय का नामकरण किया गया है - 'मन्नूजी के उपन्यासों की शिल्प - विधि।'

अन्तिम अध्याय के बाद 'उपसंहार' में अध्ययन का संक्षेप दिया गया है तथा इस विषय पर आगे के अध्ययन की संभावना पर भी विचार किया गया है।

सरकारी वनिता कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम मेरे शोध का केन्द्र रहा है। प्रस्तुत कॉलेज की प्रिंसिपल महोदया डॉ. टी. गंगा देवी तथा कॉलेज कार्यालय के कर्मचारियों से मैं विशेष आभारी हूँ, जो समय-समय पर मेरे शोध-कार्य से संबंधित पता रजिस्ट्रार, केरल विश्व विद्यालय को भेजकर मेरी सहायता करते रहे।

डॉ. पी. लता, रीडर, हिन्दी विभाग, सरकारी वनिता कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम के निर्देशन में यह शोध-कार्य संपन्न हुआ है। उनके विद्वत्ता पूर्ण तथा बहुमूल्य सुझाव इस प्रबंध की पूर्ति का पाथेय रहा है। समय-समय पर उन्होंने जो निर्देश एवं उपदेश दिए हैं उनकेलिए मैं विशेष कृतज्ञ हूँ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा का वासुदेवन पिल्लै स्मारक ग्रंथालय, वषुतक्काडु; यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, पालयम; ग्रंथालय- कार्यवट्टम ;पब्लिक

लाइब्रेरी, कोषिक्कोड तथा कोच्चिन विश्व विद्यालय के हिन्दी ग्रंथालय आदि से समय-समय पर मुझे आवश्यक पुस्तकें मिलती रहीं, जो मेरे अध्ययन को विशेष सहायक रहीं। इसकेलिए भी मैं कृतज्ञ हूँ। इस शोध प्रबंध को सुचारु ढंग से डी. टी. पी करके देने का श्रेय पिटमान्स कंप्यूटर अकादमी को है। एस. राज-कुमार ने अतिशीघ्र इसका डी.टी.पी किया। इनके प्रति भी मैं अत्यंत आभारी हूँ।

सविनय,

पुष्पम्मा. डी